आपके पत्र

संपादक महोदय,

आपकी पत्रिका मधुमेह वाणी का वर्ष–3, अंक–1 हाथ लगा। मैं स्वयं एक सरकारी डॉक्टर हूँ। पिछले सात साल से छोटी जगहों पर काम का रहा हूँ। इतनी जानकारी मधुमेह पर मरीजों तो क्या हम डॉक्टरों के लिये भी बहुत उपयोगी है। डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य नरकयात्रा ने तो मज़ा ला दिया। यह व्यंग्य नहीं मेडिकल कॉलेज का यथार्थ है। एम.डी./एम.एस. पास करने के लिये एच.ओ. डी. की चापलूसी करना जूनियर डॉक्टरों की मजबूरी है। निकोल जॉनसन की कहानी बहुत प्रेरणादायक थी। बाल मधुमेही मरीजों का हौसला जरूर बढ़ा होगा।

– डॉ. एन.एस. बेहरे, घोड़ाडोंगरी

★ ★ ★

संपादक महोदय,

मैं एम.बी.बी.एस. डॉक्टर हूँ और साथ ही डॉयबिटीज़ से ग्रस्त भी हूँ। पिछले साल भर से आपकी पत्रिका पढ़ रहा हूँ। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि 'मधुमेह वाणी' से जो ज्ञान प्राप्त हुआ वो हमें एम.बी. बी.एस. की पढ़ाई में भी नहीं दिया गया था। यह पत्रिका मरीजों ही नहीं, मधुमेह के ईलाज में लगे डॉक्टरों को भी पढ़ना चाहिये। पिछले साल चिकन गुनिया के बहुत मरीज देखने में आये। डॉ. त्रिवेदी जी का लेख सामयिक और उपयोगी था। डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी की नरकयात्रा बड़ी रोचक लगी।

– डॉ. विपिन सक्सेना, छिंदवाड़ा

★ ★ ★

आदरणीय डॉ. जिन्दल साहब,

मैंने कानपुर में टाईप–1 मधुमेह सम्मेलन में आपको सुना और आपकी पत्रिका भी ली। मेरे बच्चे को टाईप–1 मधुमेह है। आपका लेख डायबिटिक कीटाऐसिडोसिस बहुत ही उपयोगी है। अपने बच्चे को लेकर हमने भी इसी तरह के कुछ ईलाज अपनाये पर सभी बेकार सिद्ध हुऐ। अब हमें किसी प्रकार का कोई भ्रम नहीं है। इंसुलिन बच्चे की जीवन रेखा है और हमें इसे कभी बंद नहीं करना है। आप ऐसी पत्रिका निकाल कर हम जैसे अनेक लोगों पर बड़ा उपकार कर रहे हो। लोगों कों ढोंगी बाबाओं से सचेत रहने की जरूरत है। ना मालूम कितने मासूम सुधाँशु की तरह इनके चक्कर में जान गवाँ देते होंगे।

– प्रभात कुमार सच्चर, इटावा

★ ★ ★

संपादक जी,

पिछला अंक (वर्ष–3, अंक–1) बहुत अच्छा आया। मैं और मेरे परिवार के अनेक लोग डॉ. येसीकर साहब को कई वर्षों से दिखा रहे हैं। उनका लेख पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। लगा डॉक्टर साहब मेरे ही परिवार के बारे में बता रहे हो। हम चार भाई हैं और तीन मधुमेह से पीड़ित हैं। दो का बायपास हृदय रोग के लिये हो चुका है और सभी को बी.पी. भी है। लेख को पढ़कर हम अपने बच्चों के लिये सचेत हो गये हैं। शोध समाचार में यह पढ़कर आश्चर्य हुआ है कि मानसिक रोगों की दवाईयों से भी डॉयबिटीज़ हो सकती है। इतनी जानकारी इतने अच्छे से देने का आपका प्रयास बहुत सराहनीय है।

– डी.सी. जैन, भोपाल

★ ★ ★

संपादक महोदय,

डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य का हमेशा इंतेजार रहता है। पिछले अंक में ''नरकयात्रा'' डॉक्टरों के लिये तो जरूर रोचक होगी पर हम जैसे रोगियों के ऊपर से गई। आशा है कि ज्ञान जी आगे से ध्यान रखेंगे। मार्निंग वाकर पर आपकी बेबाक राय बहुत काम की थी। मैं स्वयं ये उपकरण लेने के चक्कर में था। निकोल जॉनसन की कहानी बाल मधुमेही मरीजों के लिये अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

– सचिन कुमार थत्ते, नागपुर